

व्यक्ति द्वारा उसकी धन-संपत्ति का अधिकार या प्रबंध का अधिकार दिए जाने का लिखित पत्र जो उसकी मृत्यु के बाद पालन योग्य हो।

वसीयतनामा पुं. [अर.+फा.] 1. वसीयत का वैधानिक लिखित पत्र 2. व्यक्ति के मरने के समय उसके द्वारा लिखवाया गया इच्छा-पत्र।

वसीला पुं. (अर.) अरबी का 'वसील' शब्द के लिए वसीला (हिंदी में) प्रयुक्त। साधन या उपाय।

वसुंधरा स्त्री. (तत्.) धन-संपत्ति या रत्न को धारण करने वाली पृथ्वी या धरती। इसीलिए पृथ्वी को रत्नगर्भा वसुंधरा कहा जाता है।

वसु पुं. (तत्.) 1. वित्त कोष, धन दौलत, सोना, चाँदी रत्न आदि 2. पेयजल 3. चाबुक या लगाम, रास (पशुओं के नियंत्रण की रस्सी) 4. आठ की संख्या जो कविता आदि में मात्रा की गणना में (वस्तु) प्रयुक्त होता है।

वसुदा स्त्री. (तत्.) धन संपत्ति देने वाली, पृथ्वी।

वसुदेव पुं. (तत्.) द्वापर युग में वृष्णिवंश में जन्मे शूरसेन के पुत्र, जो देवकी और रोहिणी के पति थे।

वसुदेव सुत पुं. (तत्.) वसुदेव के पुत्र कृष्ण और बलराम।

वसुधा स्त्री. (तत्.) 1. धन, रत्न को धारण करनेवाली धरती 2. एक समवर्णिक छंद।

वसुधाधर वि. (तत्.) जो पृथ्वी को धारण करता हो 1. पहाड़, नग 2. भगवान विष्णु।

वसुधानन पुं. (तत्.) धरती का मुँह।

वसुधारा स्त्री. (तत्.) अलकापुरी, कोषाधिपति, कुबेर की राजधानी।

वसुप्रद वि. (तत्.) धन देने वाला, महादेव, कुबेर।

वसुमती वि. (तत्.) 1. धन संपत्ति वाली (धरती) 2. धनवती स्त्री 3. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण और सगण के योग से छः वर्ण होते हैं।

वसुमान वि. (तत्.) धनवाला, धनी व्यक्ति, रईस।

वसूल वि. (अर.) 1. प्राप्त किया हुआ, दूसरे से उगाही किया गया 2. परिश्रम के अनुसार प्राप्त फल।

वसूलना स.क्रि. (अर.) धन उगाहना, परिश्रम के बदले फल पाना, प्राप्त करना।

वसूली स्त्री. (अर.) उपलब्धि, उगाही, प्राप्ति।

वस्तव्य वि. (तत्.) 1. वास करने योग्य जगह 2. निवास योग्य स्थान, जो स्थान वास करने योग्य हो।

वस्ति स्त्री. (तत्.) 1. नाभिक अधोभाग (नीचे का हिस्सा) जिसे वस्तिप्रदेश भी कहते हैं 2. मूत्रनली चिकि. कोष्ठबद्धता (कब्जियत) हटाने के लिए गुदामार्ग से पिचकारी द्वारा जल देना, इस क्रिया के लिए अंग्रेजी में 'एनिमा' शब्द का प्रयोग होता है।

वस्तिकर्म पुं. (तत्.) चिकित्सा शास्त्र में इस शब्द का प्रायः प्रयोग होता है, आँतों में जमे मल को निकालने के लिए गुदामार्ग से जल देने की क्रिया।

वस्तु स्त्री. (तत्.) 1. कोई भी पदार्थ, चीज या द्रव्य 2. संपत्ति, साधन, सामग्री।

वस्तुगत वि. (तत्.) वस्तुनिष्ठ, विषय से संबंधित।

वस्तुजगत पुं. (तत्.) दिखाई देने वाला (दृश्यमान संसार)।

वस्तुज्ञान पुं. (तत्.) वास्तविकता की जानकारी, तत्व का ज्ञान।

वस्तुतः क्रि.वि. (तत्.) वास्तविक रूप में, यथार्थ रूप में विधि. वैधानिक नहीं होने पर भी वास्तविक तथ्य।

वस्तुतस्तु अव्य. (तत्.) वास्तव में तो।

वस्तुत्व पुं. (तत्.) 1. वस्तु का भाव या स्वरूप 2. यथार्थता।

वस्तुत्प्रेक्षा स्त्री. (तत्.) काव्य. उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद, जिसमें उपमेय में उपमान की संभावना होती है।